Mr. Speaker: I most respectfully ask him now to sit down.

श्री बागड़ी (हिसार) : अध्यक्ष महोदय, उनको सुन ही क्यों न लें । इसमें क्या हर्ज है ।

Mr. Speaker: I have received notices from about 15 or 16 hon. Members about the fire in a bogie of the Kashi Express. I have also received intimation from the hon. Minister that he wants to make a statement *suo motu*. He may make that statement and then I will allow questions to be put.

श्री बागड़ी : लेकिन, अध्यक्ष महोदय, अकाल और मृत्यु का सवाल बड़ा अहम है । उसको आप लेते क्यों नहीं हैं ?

Mr. Speaker: Order, order.

12.02 hrs.

STATEMENT *RE*: FIRE IN A BOGIE OF KASHI EXPRESS

The Minister of State in the Ministry of Railways (Dr. Ram Subhag Singh): On 25th April, 1966 at about 14·23 hours, while train No. 47 UP Varanasi-Bombay Express was running through Ugrasenpur station on the Janghai-Allahabad section of Lucknow Division on the Northern Railway, the engine crew while looking back noticed some passengers jumping out from the train and gesticulating for the train to stop. The train was therefore immediately brought to a halt at KM 16|8 near the Down Outer signal of Ugrasenpur station. It was then found that a third class coach marshalled fourth from the train engine and eighth from the brake van was on fire.

As a result of the accident two persons were killed on the spot, and one at Phulpur while being taken to Allahabad for medical attention. Eight persons sustained grievous injuries and 25 simple.

The injured were given first aid on the spot by the Guard of the train. Immediately on receipt of the information about the accident, medical van accompanied by four doctors was rushed from Allahabad which reached the site at 17·15 hours. The civil surgeon, Allahabad also rushed to the site with three ambulance vans.

One injured was discharged on the spot after rendering medical attention. Four injured were admitted to Civil Hospital at Phulpur and the remaining 28 in hospitals at Allahabad.

The cause of the accident is under investigation by a Committee of Senior Officers.

Shri Linga Reddy (Chikballapur): Is it true that the passengers tried to stop the train but the chains were not working; if so, will the Government take precautions to see that the chains are in proper condition before the train starts?

Dr. Ram Subhag Singh: It is true. We accept that the chain was not working. Now we are going to introduce it there also. As the House knows, because it was announced here in this House in 1962 and prior to that also on several occasions, that wherever there have been a larger incidence of chain pulling the chains will be disconnected. This Varanasi-Allahabad section was one like that and therefore it was blanked off in 1962. Even then, we are now going to introduce it there.

Shri P. C. Borooah (Sibsagar): I could not follow the statement made by the hon. Minister. He says that when the train left Phulpur station it was quite all right. Then, suddenly, this has happened. May I know whether there can be any sabotage in this case also?

Dr. Ram Subhag Singh: No, Sir. This is under inquiry. We could not

attribute sabotage motive in every case. There can be short circuit of electricity or some similar cause. It is under investigation.

श्री ओंकार लाल बेरवा (कोटा) : मंत्री महोदय ने बतलाया कि तीन आदमी मरे हैं और पेपर में निकला है कि पांच मरे हैं और 35 घायल हुए हैं । मैं जानना चाहूंगा कि इन में से कौन सही है । मंत्री महोदय ने कुछ क्षेत्रों के अन्दर से रेलों में जंजीरें हटा दी हैं क्योंकि वहां दुर्घटनायें होती थीं और लोग गाड़ी रोक लेते थे । गाड़ी रोकने का जो साधन आपने बनाया हुआ था जिस से गाड़ी रोक कर लोग दुर्घटनाओं से अपने को बचाते, वह आप ने हटा दिया । डब्बों में से जो लोग कूदे वह इसीलिये घायल हुए थे । मैं जानना चाहता कि उस गाड़ी में आप ने उसको रोकने का क्या साधन बनाया हुआ था ।

डा० राम सुभग सिंह : असल में जो साधन की बात पूछी गई है उसके सम्बन्ध में मैं कहना चाहता हूं कि साधन कोई नहीं है । चूंकि वहां पर लोग जंजीर खींच कर गाड़ी रोक लेते थे इसलिये वह साधन डिसकंटिन्यू कर दिया गया था । जहां तक इस बात का सवाल है कि अखबार में निकला है कि पांच आदमी मरे हैं, मैं अखबार वालों को काटना नहीं चाहता । लेकिन हम लोगों को जो खबर है वह इतनी ही है कि तीन आदमी मरे हैं । वहां पर तत्काल डाक्टरों की राय ली गई कि क्या सही बात है तो उन्होंने कोई दूसरी बात नहीं बतलाई । दूसरा कोई साधन रोकने का नहीं बनाया गया है । पहले वाले को डिसकंटिन्यू कर दिया गया था क्योंकि हम ने देखा कि उससे गाड़ियां बहुत रोकी जाती थीं । किन्हीं भी कारणों से लोग मरे हों, कूदने के कारण या जलने के कारण, दोनों ही प्रकार की रिपोर्टें हमें मिली हैं, इसके सिवाय तीसरा कोई कारण नहीं था । जब रेलवे के लोगों ने लोगों की आवाज सुनी तब गाड़ी रोक दी गई ।

श्री मौर्य (अलीगढ़) : इस से भी भयंकर दुर्घटनायें हो सकती हैं जब कि रेलों से जंजीर खींचने की व्यवस्था खत्म कर दी गई है और रेलगाड़ियों में इससे भी भयंकर परिणाम निकल सकते हैं । किन्तु चूंकि झगड़ा होगा इसलिये शादी नहीं करनी चाहिये, यह कोई ठीक व्यवस्था नहीं है । तब क्या सरकार यह भी विचार करेगी कि कहीं भी किसी ट्रेन में ऐसा न हो कि वह बगैर ऐसी सुविधा के चलाई जाये जिसमें कि ऐसी और इससे भी भयंकर परिस्थितियां न पैदा हों ।

डा० राम सुभग सिंह : मैं प्रश्नकर्ता महोदय की यह बात मानता हूं कि झगड़ा चल जायेगा इस लिये शादी बन्द नहीं होनी चाहिये और इसी से हम लोग इस पर विचार कर रहे हैं कि इस व्यवस्था को फिर से चालू किया जाये या नहीं ।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : अभी मंत्री महोदय ने बतलाया कि डाक्टरों से उनको यह जानकारी मिली थी कि तीन आदमी मरे हैं । मैं जानना चाहता हूं कि जो मरे हैं वह कूदने के कारण मरे हैं या जलने के कारण मरे हैं । और यदि दोनों कारणों से मरे हैं तो कितने कूदने के कारण और कितने जलने के कारण ?

डा० राम सुभग सिंह : असल में यह बात और है । इस प्रश्न में बात पांच और तीन की है । तो हम लोग इस बात को छिपाना नहीं चाहेंगे, फौरन उसे बतलायेंगे । पांच और सात भी हो तो हम उसे स्वीकार करेंगे और कम्पेन्सेशन भी देंगे । पूछा गया कि हम ने अपने सन्तोष के लिये क्या किया । . . . .

अध्यक्ष महोदय : पूछा गया कि क्या कुछ लोग कूदने से भी मर गये ।

डा० राम सुभग सिंह : जब कूदने की बात सामने आई तो उसी से हम ने पता लगाया । लेकिन उन्होंने बतलाया कि अभी

[डा० राम सुभग सिंह]

ठीक बात बतलाना सम्भव नहीं है । कुछ जले भी हैं और कूदने के कारण भी मृत्यु हो सकती है ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय (सलेमपुर) : जैसा मंत्री महोदय ने बतलाया, यह ट्रेन बनारस से चली, और वहां पहुंचने में भी सिर्फ एक घंटे का समय लगता है । मैं जानना चाहता हूं कि जब ट्रेन बनारस से चली तो क्या उसको ठीक तरह से टेकनिकल लोगों ने देखा था कि उस डब्बे में क्या खराबी थी और क्या खराबी नहीं थी, और क्या न देखने की वजह से इस तरीके की दुर्घटना हुई है जिस में इतने आदमी मर गये हैं या घायल हो गये हैं, और इस की क्या प्रतिक्रिया सरकार पर हुई है ।

डा० राम सुभग सिंह : वहां से जो खबर मिली है उसके अनुसार उसे अच्छी तरह से देखा गया था, और न केवल बनारस में बल्कि जंघई में भी जब गाड़ी रुकी हुई थी तो वहां ऐसे कोई लक्षण पैदा नहीं हुए । इस आग के लगने के पच्चीस मिनट पहले यह गाडी जंघई स्टेशन पर रुकी थी । इसलिये ऐसी कोई खबर नहीं है, लेकिन जांच के बाद सारी बातों का पता चल जायेगा ।

श्री बागड़ी (हिसार) : ऐसी गाड़ियों के चलने से, जिससे दुर्घटना की सम्भावना हो, जैसे कि रात को गाड़ियां बगैर किसी रोशनी के चलती हैं, या ऐसे डब्बे होते हैं जिनके पहिये जैम हों और उनकी सर्विस न की गई हो, आग लग जाया करती है । तो क्या इन तरीकों को इस्तेमाल कर के ऐसी गाड़ियों का चलना रोका जायेगा जिनसे ऐक्सिडेंट्स हों और इन्सानी जान को खतरा हो सकता हो । इसके लिये सरकार क्या विचार कर रही है ।

डा० राम सुभग सिंह : नहीं हम लोगों का प्रयास यही होगा कि जो कंडेम्ड कोचेज हों वह न चलाये जायें । लेकिन यह कोच आई० सी० एफ० का बना हुआ था और इसकी जांच 11 नवम्बर, 1965 को हुई थी । दूसरी जांच 11 नवम्बर, 1966 को ड्यू थी कि वह काम लायक है या नहीं । अभी वह बिलकुल काम लायक था । हालांकि जो प्रश्न के तह में बात है उसे मैं मानता हूं लेकिन इसमें सामने कोई डिफेक्ट नजर नहीं आया ।

श्री बागड़ी : बगैर रोशनी के गाड़ी नहीं चलाओगे, डिब्बों में रोशनी होनी चाहिए ।

डा० राम सुभग सिंह : यह तो दिन की बात थी और दिन में कोई लाइट जलाने की बात नहीं थी ।

Shri P. R. Chakraverti (Dhanbad): In view of the sad experience of yesterday and on another occasion in Bihar where the passengers were robbed, the miscreants went away and the passengers could not get any relief because the chain was out of order, may I know whether Government will take all these factors into account and make it safe for the passengers by again introducing the alarm chain and cancelling that order?

Dr. Ram Subhag Singh: I have already accepted that we are going to change that order. About the miscreants, the hon. Member represents that part of Bihar and he should also do something about it.

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपको अपना विरोध दर्शाना चाहता हूं कि ऐसा जब कभी मौका आता है तो माननीय पाटिल जी और माननीय राम सुभग सिंह जी फौरन हरजाने की बात कर दिया करते हैं । यह अच्छा नहीं है । जब जानें जाती हैं तब केवल हर्जाने की बात करना ठीक नहीं है । मेरा प्रश्न यह है कि माननीय राम सुभग सिंह जी ने अक्सर यह कहा कि गाड़ी या कोई दुर्घटना उनके आपरेशनल फेल्योर, उनके

गाड़ी के चलाने की असफलता से नहीं हुई लेकिन क्या इस मामले में वह नहीं सोचते कि उनकी खुद की असफलता है ? एक तो यह कि उन्होंने जंजीर रुकवा दी और दूसरे मुमकिन है और इसी तरह की कोई गड़बड़ी हुई हो, तो अगर उनकी खुद की असफलता है तो उनके ही सिद्धान्त से या तो उनको या पाटिल जी को इस्तीफा देने में अब क्यों देर हो रही है ?

डा० राम सुभग सिंह : असल में यह चीज हम लोगों ने कही है । खासकर के मैंने कहा कि पहले जो ऐक्सीडेंट हुए थे लुमडिंग में या और जगह, डिपो वगैरह में, वह आपरेशनल फ्रेल्योर के चलते नहीं हुए और उस पर मैं बिलकुल अड़ा हूं और इसको मैंने बगैर डाक्टर लोहिया के कहने के पहले ही कबूल कर लिया कि हो सकता है कि चेन नहीं रहने से ऐसा हुआ हो, चेन होती तो उससे फायदा यह रहता कि गाड़ी रुक गई होती । उस असफलता को मैं मानता हूं और मिनिस्टर रहना या न रहना, मैं चाहता कि 52 में मैं मिनिस्टर बनू तो, चाहने के बजाये भी नहीं बनता, कोई अपनी इच्छा से मिनिस्टर नहीं बनता । हम लोग जाने को तैयार हैं अगर अच्छा हो पार्लियामेंट की और मैं आपकी आज्ञा मान लेता हूं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : पार्लियामेंट जब लात मारेगी तब जाओगे ।

श्री अ० प्र० शर्मा (बक्सर) : अध्यक्ष महोदय, यह जो पांच आदमी या तीन आदमी जो भी मरे हैं और जो 35 आदमी घायल हैं, क्या इनका आइडेंटिफिकेशन हो गया है और इनके जो निकट परिवार के लोग हैं उनको सूचना दी गई है और जो लोग घायल हैं उनकी चिकित्सा कहां किस अस्पताल में हो रही है ?

डा० राम सुभग सिंह : चिकित्सा के बारे में मैंने बतलाया कि इलाहाबाद अस्पताल में वे लोग हैं और इनको एक्स-ग्रेशिया पेमेंट के बारे में भी इस मूल वक्तव्य में बताया । इनके परिवार के जितने लोग हैं उनको हम लोग इत्तिला देंगे ।

श्री काशी राम गुप्त (अलवर) : मंत्री महोदय ने बताया कि इंजन के ड्राइवर और दूसरे कर्मचारियों ने पीछे जब देखा और लोगों को गिरते हुए देखा तब गाड़ी को ठहराया, तो मैं जानना चाहता हूं कि उस वक्त गाड़ी किस रफ्तार से चल रही थी और उस डिब्बे में कितने आदमी थे जिसमें कि लोग मरे और घायल हुए हैं ?

डा० राम सुभग सिंह : उसके लिए मैं सूचना चाहता हूं क्योंकि वह कलेक्ट करके सूचना देनी होगी । यह जितने लोग घायल हुए हैं और जितने मरे हैं उनकी तादाद तो बता दी है ।

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): From the reply of the hon. Minister it appears that this has been taken very lightly. May I draw your attention to this? This was Bombay bound Banaras Express, running from Banaras to Bombay—an express train and not a passenger train. A decision was taken in this House—rather the Minister said it before— that on those trains where chain-pulling is done more by miscreants, the chain may be blanked off; it was definitely decided here that no chain should be blanked off in express or mail trains. I would like to know whether the Railway Minister still feels that there is no failure on his part in this matter. I feel that there has been a failure on the part of the Railway Ministry.

I would also like to invite your attention to another report in *The Statesman* about robbery in a Train—six people were robbed.

Mr. Speaker: No robbery here.

Shri S. M. Banerjee:.....because the alarm chain had been blanked

[Shri S. M. Banerjee]

out. I would like to know whether the Railway Ministry is not directly responsible for this failure and for the loss of lives of those people and whether there would be an inquiry into the whole affair by a high-powered commission, and how many chains have been blanked off.

The Minister of Railways (Shri S. K. Patil): Every day there are hundreds of cases—not one or two—of failures of various kinds; this House has discussed them often and sometimes questions were asked as to why a research section should not be created; it has also been created. Therefore, there is nothing that there has not been any failure on the part of personnel. What my colleague had said was that, so far as those particular accidents were concerned, there was no failure on the part of personnel. The question is that we have got to strike a balance. Four years ago, in 1962, when there were a series of chain-pu'lings causing so much of inconvenience and delay, after much discussion it was decided in those years that the chain should be blanked off over the section where these things were in a large number. (*Interruptions*). Unfortunately that used to be this section, i.e., between Banaras and Allahabad. The pity of it is not that the chain was permanently blanked out, but only that section is blanked out; immediately when the train comes to the other parts, it begins to operate. But I find on an enquiry today—because this had happened—that it is a very serious thing because the passengers must have some security. It may happen—the chance may be one in a hundred—that some persons might be using it in a frivolous manner, but because some people do it in a frivolous manner, surely it is not justified that the others should not have that. We have taken a policy decision when this incident occurred that this blanking off must stop, no matter how much inconvenience we have to suffer because even those who might have jumped out of the train and died, did so because they wanted to save their lives. Therefore, we have taken that decision.

श्री यशपाल सिंह (कैराना) समाजवाद की संहिता में कहीं ऐसा भी लिखा हुआ है कि गरीब आदमी की जान की हिफाजत न की जाय और अमीर आदमी की जान की हिफाजत की जाय? जब भी कभी आग लगती है तो थर्ड क्लास की बोगी में आग लगती है ; फर्स्ट क्लास के डिब्बों में भी आंच नहीं आती, इसका क्या कारण है ? इसको आप कैसे दूर करेंगे ?

Shri S. K. Patil: Should I reply? Some years ago there was a fire in a First Class compartment and an hon. member of this House died.

12.19 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

KERALA MOTOR VEHICLES RULES, 1961

The Minister of Transport, Aviation, Shipping and Tourism (Shri Sanjiva Reddy): I beg to lay on the Table a copy of Notification S.R.O. No. 45|66 published in Kerala Gazette dated the 15th February, 1966, making certain amendment to the Kerala Motor Vehicles Rules, 1961 under sub-section (3) of section 133 of the Motor Vehicles Act, 1939, read with clause (c) (iv) of the Proclamation dated the 24th March, 1965, issued by the Vice-President, discharging the functions of the President, in relation to the State of Kerala. [*Placed in Library, See* No. LT-6134/66].

ESSENTIAL COMMODITIES ACT, 1955

The Minister of State in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Co-operation (Shri